02 संधि

''वर्णानां परस्परं विकृतिमत् संधानं संधि।''

''दो वर्णों में अति निकटता के कारण उनके मेल से जो विकार होता है, उसे 'संधि' (Enphony) कहते हैं।'' जैसे—

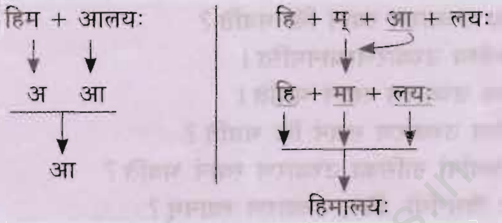

उपर्युक्त उदाहरण में 'म' में निहित स्वर 'अ' एवं 'आलय' का आद्य स्वर 'आ'—ये दोनों मिलकर 'आ' बन गए। अर्थात् इन दोनों में संधि हुई है।

किसी पूर्ववर्ती शब्द के अंतिम वर्ण के साथ परवर्ती शब्द का आदि वर्ण जब मिलता है तब 'वहिः संधि' (External Sandhi) कही जाती है। किसी प्रातिपदिक अथवा धातु के अंतिम वर्ण के साथ विभक्तियों के आद्यक्षर का जब मेल होता है तब उसे 'अंतः संधि' (Internal Sandhi) कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण वहिः संधि का है।

Note : *धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त शब्दों को छोड़कर सभी सार्थक शब्दों को 'प्रातिपदिक कहते हैं। जैसे— देव, राजा आदि। ''अर्थवदधातुर प्रत्ययः प्रातिपदिकम्।''*

वहिः संधि तीन प्रकार की होती है

1. स्वर संधि (अच् संधि)

''स्वर वर्णों के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार हो उसे स्वर संधि कहते हैं।''(स्वर वर्ण + स्वर वर्ण = विकार) जैसे—

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

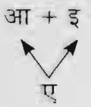

(इस उदाहरण में 'आ' एवं 'इ' इन दो स्वरों का मेल हुआ है।)

यह विकार आठ रूपों में दिखता है—

(a) दीर्घ (b) गुण (c) वृद्धि (d) यण् (e) अयादि
(f) पूर्वरूप (g) पररूप और (h) प्रकृति-भाव

इनके नियम एवं सूत्र इस प्रकार हैं—

(A) अकः सवर्णे दीर्घः — दो परस्पर समान स्वर चाहे ह्रस्व हों या दीर्घ, दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे—

अ/आ + अ/ आ = आ

शश + अंकः = शशांकः (अ + अ = आ)
रत्न + आकरः = रत्नाकरः (अ + आ = आ)
महा + आशयः = महाशयः (आ + आ = आ)

इ/ई + इ/ई = ई

अति + इव = अतीव (इ + इ = ई)
कवि + ईशः = कवीशः (इ + ई = ई)
मही + इन्द्रः = महीन्द्रः (ई + इ = ई)
लक्ष्मी + ईशः = लक्ष्मीशः (ई + ई = ई)

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

मधु + उत्सवः = मधूत्सवः (उ + उ = ऊ)
लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः (उ + ऊ = ऊ)
वधू + ऊहनम् = वधूहनम् (ऊ + ऊ = ऊ)

ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ

पितृ + ऋणम् = पितॄणम् (ऋ + ऋ = ॠ)
मातृ + ऋद्धिः = मातॄद्धिः (ऋ + ॠ = ॠ)

(B) आदगुणः

(a) अ/आ के परे ह्रस्व 'इ' या दीर्घ 'ई' रहे तो दोनों मिलकर 'ए' हो जाते हैं। यानी अ/आ/ + इ/ई = ए

जैसे— देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः (अ + इ = ए)
रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई =ए)

(b) अ/आ के बाद उ/ऊ रहे तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।

अर्थात् अ/आ + उ/ऊ = ओ

जैसे— नील + उत्पलम् = नीलोत्पलम् (अ + उ = ओ)
महा + उदयः = महोदयः (आ + उ = ओ)
गंगा + ऊर्मिः = गंगोर्मिः (आ + ऊ = ओ)

(c) अ/आ के बाद ऋ रहे तो दोनों मिलकर 'अर्' हो जाता है। इसमें 'अ' पूर्व व्यंजन से मिल जाता है और 'र् अगले वर्ण पर 'रेफ' के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे— महा + ऋषिः = महर्षिः।

इस उदाहरण को इस प्रकार समझें—

महा + ऋषिः

(अस्वर व्यंजन) ह् आ + ऋ = अर्
(स्वर निकाल लिया गया)

विच्छिन्न वर्ण—म + ह् + अर् + षि

'षि' पर रेफ

ह ('ह्', 'अ' से मिलकर स्वरयुक्त हो गया)

संधि पश्चात् रूप 'महर्षिः

(C) वृद्धिरेचि

अ/आ के बाद ए/ऐ रहे तो दोनों मिलकर 'ऐ' एवं ओ/औ रहे तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं।

यानी, अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ = औ। जैसे—

अद्य + एव = अद्यैव/अद्यैव (अ + अ = ऐ)

मत + ऐक्य = मतैक्य (अ + ऐ = ऐ)

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

जल + ओघः = जलौघः (अ + ओ = ओ)

सदा + औत्सुक्यम् = सदौत्सुक्यम् (आ + औ = औ)

अपवाद—*धातु का एकार या ओकार परे रहे तो उपसर्ग के अ/आ का लोप हो जाता है। 'ए' और 'ओ' उपसर्ग में मिल जाते हैं। जैसे—*

प्र + एजते = प्रेजते

उप + एषते = उपेषते

परा + ओहति = परोहति

परन्तु, 'एध'/ 'इण' धातु के 'ए' परे रहने पर ऐसा नहीं होता। जैसे—

उप + एधते = उपैधते

अव + एति = अवैति

www.classroomnotes.in

(D) इकोऽयणचि

(a) यदि इ/ई के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो इ/ई का 'य्' हो जाता है। और 'य्' पूर्व वर्ण से मिल जाता है।

यानी, इ / ई + भिन्न स्वर (इ/ई को छोड़ कोई स्वर) जैसे—

इ / ई → य्

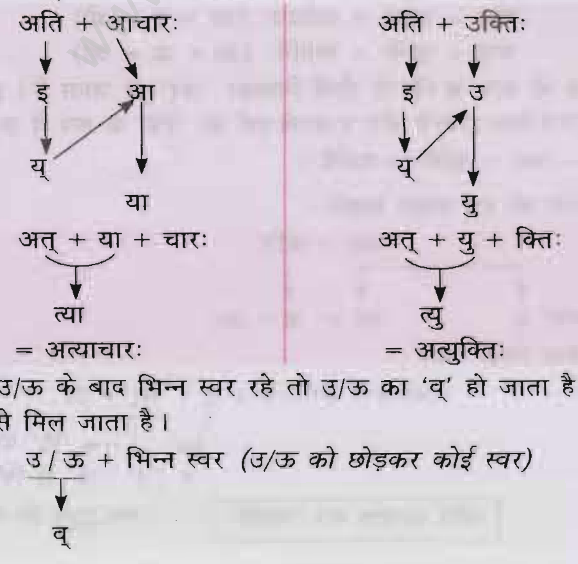

(b) यदि उ/ऊ के बाद भिन्न स्वर रहे तो उ/ऊ का 'व्' हो जाता है और वह पूर्व वर्ण से मिल जाता है।

यानी, उ / ऊ + भिन्न स्वर *(उ/ऊ को छोड़कर कोई स्वर)*

उ / ऊ → व्

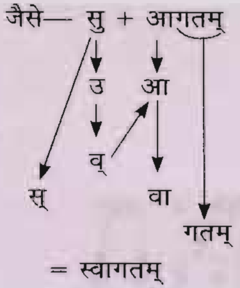

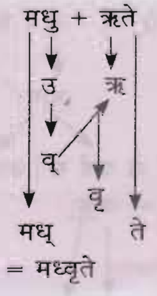

(c) यदि 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो 'ऋ' का 'र्' हो जाता है और वह पूर्व के वर्ण से मिल जाता है। इसी तरह 'लृ' के बाद भिन्न स्वर रहने पर 'लृ' का 'ल्' हो जाता है।

यानी, ऋ / लृ + भिन्न स्वर (ऋ/लृ को छोड़कर कोई स्वर)

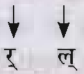

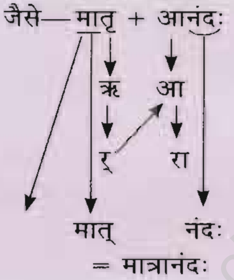

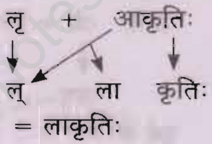

(E) एचोऽयवायावः

(a) यदि 'ए' के बाद कोई स्वर हो तो 'ए' का 'अय्' हो जाता है। 'अकार' पूर्व वर्ण से और 'य्' आगे के वर्ण से मिल जाता है।

यानी, ए + भिन्न स्वर ('ए' के अलावा स्वर)

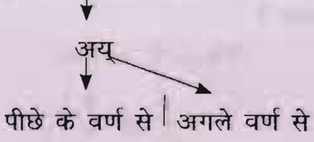

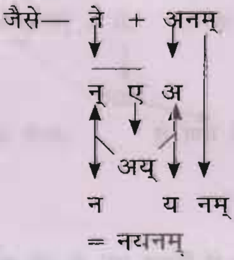

(b) 'ऐ' के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो 'ऐ' का 'आय्' हो जाता है। 'आय्' का आकार पूर्व वर्ण से एवं 'य्' आगेवाले वर्ण से मिल जाता है।

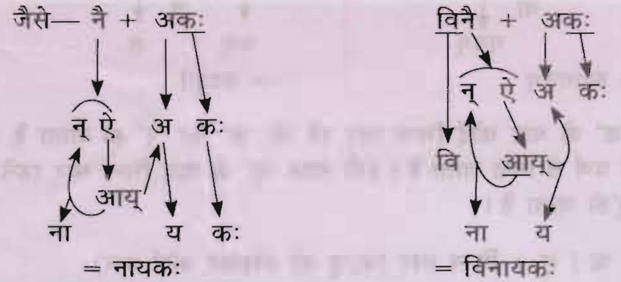

(c) यदि, 'ओ' के बाद भिन्न स्वर रहे तो 'ओ' का 'अव्' हो जाता है। 'अव्' का 'अकार' पूर्व के वर्ण से एवं व आगे के वर्ण से मिल जाता है।

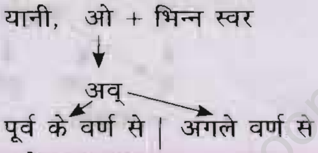

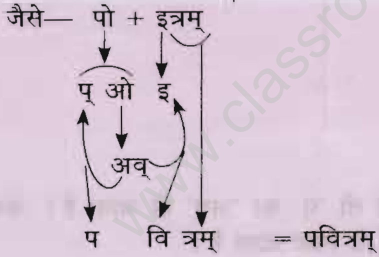

(d) यदि, 'औ' के बाद भिन्न स्वर रहे तो 'औ' का 'आव्' होकर 'आ' पूर्व के वर्ण से एवं 'व्' आगेवाले वर्ण से मिल जाता है

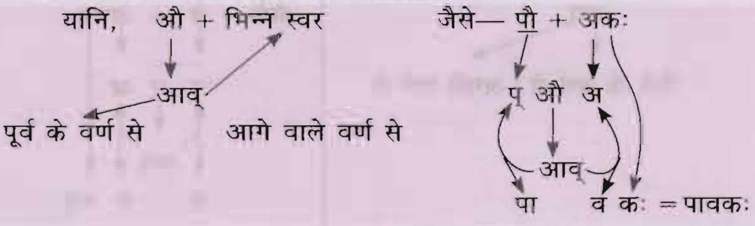

(e) पदान्त में स्थित 'ए' के परे कोई दूसरा स्वर वर्ण हो तो 'ए' के स्थान में एक-बार 'अय्' और 'य्' के लोप होने पर भी 'अ' होता है, लेकिन लोप होने पर फिर संधि नहीं होती। जैसे—

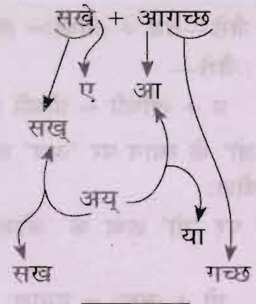

= सखयागच्छ

(f) पदान्त में स्थित 'ऐ' के परे कोई दूसरा वर्ण रहने पर 'ऐ' के स्थान पर 'आय्' तथा 'य्' के लोप होने पर 'आ' भी होता है। 'आ' होने पर फिर से संधि नहीं होती। जैसे— श्रियै + आग्रहः = श्रियायाग्रहः । श्रिया आग्रहः

(g) पदान्त में स्थित 'ओ' के परे कोई अन्य स्वर रहे तो 'ओ' का 'अव्' तथा 'व्' के लोप होने पर भी 'अ' रह जाता है। जैसे—

प्रभो + आगच्छ= प्रभवागच्छ/प्रभ आगच्छ

प्रभो + उच्यताम् = प्रभवुच्यताम् /प्रभ उच्चताम्

(h) पदान्त में स्थित 'औ' के बाद स्वर वर्ण रहने पर 'औ' का 'आव्' तथा 'व्' के लोप होने पर भी 'आ' रह जाता है। जैसे— रवौ + उदिते = रवावुदिते।

(F) एङः पदान्तादति

पदान्त में अगर 'ए' अथवा 'ओ' हो और उसके परे 'अकार' हो तो उस अकार का लोप हो जाता है। लोप होने पर 'अकार' का जो चिह्न रहता है उसे (ऽ) 'लुप्ताकार' या 'अवग्रह' कहते हैं। जैसे— कवे + अवेहि = कवेऽवेहि

प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण

(G) 'स्व' शब्द के साथ 'ईर' या 'ईरिणी' के मिलने पर 'ऐ' हो जाता है। जैसे—

स्व + ईरम् = स्वैरम्

स्व + ईरिणी = स्वैरिणी

(H) इसी तरह अक्ष' शब्द के साथ परवर्ती 'ऊहिनी' शब्द का 'ऊ' मिलकर 'औ' हो जाता है। जैसे— अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी

(I) तृतीया तत्पुरुष समास (करण तत्पुरुष) में 'अवर्ण' के परस्थित 'ऋत' शब्द का 'ऋकार' पूर्ववर्ती 'अ' के साथ मिलकर 'आर्' हो जाता है। जैसे—

शीत + ऋतः = शीतार्तः

क्षुधा + ऋतः = क्षुधार्तः

परन्तु तृतीया तत्पुरुष नहीं होने पर ऐसा नहीं होता। जैसे—

परम + ऋतः = परमर्तः

(J) समास होने पर 'ओष्ठ' और 'ओतु' शब्द के परे रहने पर विकल्प से 'अ' का लोप हो जाता है। जैसे—बिम्ब + ओष्ठः = बिम्बौष्ठः/बिम्बोष्ठः

स्थूल + ओतुः = स्थूलोतुः/स्थूलौतुः

www.classroomnotes.in

समास नहीं होने पर ऐसा नहीं होता है। जैसे—*तव + ओष्ठः = तवौष्ठः*

संज्ञा होने पर भी 'अ' का लोप होता है। जैसे—

प्र + ओष्ठः = प्रोष्ठः (वृष) प्र + ओष्ठी = प्रोष्ठी (एक मछली)

(K) स्वर वर्ण के परे रहने पर 'गो' शब्द के 'ओ' के स्थान पर 'अव' तथा 'अव्' दोनों होते हैं। जैसे— गो + ईशः = गवेशः/गवीशः

परन्तु, 'अक्ष' और 'इन्द्र' शब्द परे रहने पर 'गो' शब्द के 'ओकार' के स्थान में नित्य ही 'अव' होता है। जैसे—

गो + इन्द्रः = गवेन्द्रः गो + अक्षः = गवाक्षः

(L) कुछ पद निपातन से सिद्ध होते हैं। जैसे—

मनस् + ईषा = मनीषा
हल् + ईषा= हलीषा
सीमन् + अन्तः = सीमन्तः (केशविन्यासः) सीमान्तः
पतत् + अञ्जलिः = पतञ्जलिः/पतंजलिः
कुल + अटा = कुलटा
शक् + अंधु : = शकन्धुः
कर्क + अंधुः = कर्कन्धुः
पर + अक्षः = परोक्षः
अन्य + अन्यम् = अन्योन्यम्
सार + अङ्गः = सारङ्गः
मार्त + अण्डः = मार्तण्डः

संधि-निषेध

(a) किसी द्विवचनान्त पद के अन्त में ई/ऊ अथवा 'ए' हो और उसके परे कोई स्वर वर्ण हो तो संधि नहीं होती। जैसे—

हरी + एतौ = हरीएतौ
विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ
गंगे + अमू = गंगे अमू

(b) 'अदस्' शब्द के बहुवचन के 'अमी' पद के साथ किसी स्वर वर्ण की संधि नहीं होती। जैसे— अमी + ईशाः = अमी ईशाः
अमी + अश्वाः = अमी अश्वाः

(c) 'ओकारान्त' अथवा एक स्वर वाले अव्यय शब्द के साथ संधि नहीं होती। जैसे— हे राम + आगच्छ = हे राम आगच्छ
अ + अद्यापि = अ अद्यापि
उ + उत्तिष्ठ = उ उत्तिष्ठ
ए + एवमेवैतत् = ए एवमेवैतत्

2. व्यंजन संधि (Consonantal Combinations)

व्यंजन वर्ण किसी दूसरे व्यंजन वर्ण अथवा स्वर वर्ण से मिलकर विकार उत्पन्न करता है तब 'व्यंजन संधि' होती है।

www.classroomnotes.in

अर्थात्, व्यंजन वर्ण + व्यंजन वर्ण/स्वर वर्ण > विकार

जैसे— दिक् + गजः = दिग्गजः   दिक् + अन्तः = दिगन्तः

↓ ↓   ↓ ↓

व्यंजन + व्यंजन   व्यंजन + स्वर

↓   ↓

ग् (विकार)   ग् (विकार)

निम्नलिखित स्थितियों में व्यंजन संधि होती है—

(i) स्तोः श्चुनाश्चुः

(a) यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'च' या 'छ' हो तो 'त्' या 'द्' का 'च्' हो जाता है। जैसे— भवत् +चरणम् = भवच्चरणम्
एतद् + चन्द्रमण्डलम् = एतच्चन्द्रमण्डलम्

(b) यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ज' या 'झ' रहे तो 'त्' या 'द्' का 'ज्' हो जाता है। जैसे— उत् + ज्वलः = उज्ज्वलः
एतद् + जननम् = एतज्जननम्

(c) यदि 'न्' के बाद 'ज' या 'झ' हो तो 'न्' का 'ञ्' हो जाता है। जैसे—
महान् + जयः = महाञ्जयः
उद्यन् + झंकारः उद्यञ्झंकारः

(d) यदि पदान्त में 'त्' या 'द्' हो और उसके बाद 'श' हो तो 'त्' या 'द्' का 'च्' और 'श' का 'छ' हो जाता है। जैसे—
महत् + शकटम् = महच्छकटम्/महच्शकटम्
तद् + शरीरम् = तच्छरीरम् /तच्शरीरम्

(e) यदि पदान्त में 'न्' हो और उसके बाद 'श्' हो तो 'न्' का 'ञ' एवं 'श' विकल्प से 'छ' हो जाता है। जैसे—
महान् + शब्दः = महाञ् शब्दः/महाञ्छब्दः
धावन् + शशः = धावञ्शशः/धावञ्छशः

(f) यदि पदान्त में 'त्'/'द्' हो और बाद में 'ह' हो तो 'त्'/'द्' का 'द्' और 'ह्' का 'ध' हो जाता है। जैसे— उत् + हतः = उद्धतः
तत् + हितम् = तद्धितम्

(g) यदि 'चकार' या 'जकार' के परे 'न्' हो तो 'न्' के स्थान पर 'ञ्' हो जाता है। जैसे— याच् + ना = याच्ञा
यज् + नः = यज्ञः
राज् + नी = राज्ञी

(ii) स्तोः ष्टुनाष्टुः

(a) यदि त्/द् के बाद ट/ठ हो तो त्/द् का 'ट्' हो जाता है। जैसे—
तत् + टीका= तट्टीका
सत् + ठकारः सट्ठकारः

www.classroomnotes.in

(b) यदि त्/द् के बाद ठ/ड रहे तो त्/द् का 'ड्' हो जाता है। जैसे—

उत् + डीनः = उड्डीनः

महत् + ठालम् = महड्ठालम्

(c) यदि 'न्' के बाद ड/ ठ हो तो 'न्' का 'ण्' हो जाता है। जैसे—

महान् + डामरः = महाण्डामरः

(iii) तथौ टठौ षकारात्

यदि 'ष्' के बाद त्/थ् हो तो 'त्' का 'ट्' एवं 'थ्' का 'ठ्' हो जाता है।

जैसे— आकृष् + तः = आकृष्टः

षष् + थः = षष्ठः

(iv) ले लस्तवर्गस्य

(a) यदि त्/द् के बाद 'ल्' हो तो त्/द् का 'ल्' हो जाता है। जैसे—

उत् + लेखः = उल्लेखः

(b) यदि 'न्' के बाद 'ल' हो तो 'न्' का 'ल्' हो जाता है और नकार परवर्ण में चन्द्रबिन्दु के रूप में संयुक्त होता है। जैसे—

महान् + लाभः = महाँल्लाभः

(v) यदि पदान्त में 'न्' हो और उसके बाद कोई स्वर वर्ण हो तो 'न्' का द्वित्व हो जाता है। जैसे— हसन् + आगतः = हसन्नागतः

अपवाद— *परन्तु; यदि पद का अन्तस्थित 'न्' किसी दीर्घ स्वर के परे हो तो 'न्' का द्वित्व नहीं होता। जैसे— महान् + आग्रहः = महानाग्रहः*

(vi) यदि 'न्' के आगे च / छ हो तो 'न्' का अनुस्वार, 'च्' के स्थान पर 'श्च' और 'छ' का 'श्छ' हो जाता है। जैसे— पश्यन् + चकितः = पश्यंश्चकितः

महान् + छेदः = महांश्छेदः

(vii) यदि 'न्' के बाद ट/ठ हो तो 'न्' का अनुस्वार एवं ट/ठ का ष्ट/ष्ठ हो जाता है।

जैसे— उद्यन् + टंकारः = उद्यंष्टंकारः

महान् + ठक्कुरः = महांष्ठक्कुरः

(viii) यदि 'न्' के आगे त/थ हो तो 'न्' का अनुस्वार एवं त/थ का स्त/स्थ हो जाता है। जैसे— महान् + तडागः = महांस्तडागः

पतन् + तरुः = पतंस्तरुः

(ix) यदि 'म्' के बाद अन्तस्थ वर्ण या ऊष्म वर्ण यानी य, र, ल व, श, ष, स, ह रहे तो म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे— विद्याम् + लभते = विद्यांलभते

सम् + सारः = संसारः

सम् + हारः = संहारः

सत्वरम् + याति= सत्वरंयाति

(x) यदि 'म्' के बाद कोई स्पर्श व्यंजन ('क्' से 'म्' तक) रहे तो 'म्' का अनुस्वार या उसी वर्ग का पञ्चमाक्षर हो जाता है। जैसे—

किम् + करोषि= किंकरोषि/किङ्करोषि

शत्रुम् + जहि = शत्रुंजहि/शत्रुञ्जहि

मधुरम् + भाषते = मधुरंभाषते / मधुरम्भाषते

सम् + चारः = संचारः/सञ्चारः

(xi) ह्रस्व स्वर के परे 'छ' हो तो 'च्' का आगम हो जाता है। जैसे—

परि + छेदः परिच्छेदः

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

परन्तु, 'छ' किसी दीर्घ स्वर के बाद हो तो 'च्' वैकल्पिक रूप से आता है। जैसे— उमा + छत्रम् = उमाछत्रम्/ उमाच्छत्रम्

अपवाद—*आ/मा के परवर्ती 'छ' हो तो 'च्' निश्चित रूप से आता है। जैसे—*

आ + छादयति= आच्छादयति

मा + छिदत् = माच्छिदत्

(xii) 'उत्' के बाद स्था/ स्तम्भ धातु के 'स्' का लोप हो जाता है। जैसे—

उत् + स्थापनम् = उत्थापनम्

उत् + स्तम्भितम् = उत्तम्भितम्

(xiii) 'क्' के बाद स्वर वर्ण/वर्गों का तीसरा/चौथा वर्ण/अन्तःस्थ या 'ह' हो तो 'क्' का 'ग्' हो जाता है। जैसे— वाक् + आडम्बरः = वागाडम्बरः

वाक् + ईशः = वागीशः

प्राक् + एव = प्रागेव

दिक् + गजः = दिग्गजः

सम्यक् + वदति= सम्यग्वदति

(xiv) यदि 'त्' के बाद स्वर वर्ण/वर्गों का तीसरा, चौथा वर्ण/अन्तःस्थ वर्ण रहे तो 'त्' का 'द्' हो जाता है। जैसे— जगत्+ अन्तः = जगदन्तः

जगत् + ईशः = जगदीशः

महत् + ओजः = महदोजः

जयत् + रथः = जयद्रथः

(xv) यदि च् /ट्/प् के बाद स्वर वर्ण/वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण/अन्तःस्थ वर्ण/ह रहे तो 'च्' का 'ज्', 'ट्' का 'ड्' एवं 'प्' का 'ब्' हो जाता है। जैसे—

अच् + अन्तः = अजन्तः

परिव्राट् + उवाच= परिवाड्उवाच

अप् + हरणम् = अब्हरणम्

(xvi) यदि 'क' के आगे 'न / ल' हो तो 'क्' का 'ङ्' हो जाता है। जैसे—

दिक् + नागः = दिङ्नागः

प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः

(xvii) यदि त्/द् के बाद न/म हो तो त्/द् का न् हो जाता है। जैसे—

जगत् + नाथः = जगन्नाथः

तद् + नीरम् = तन्नीरम्

(xviii) यदि 'मय' या 'मात्र' आगे हों तो पद के शेष में स्थित वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान में केवल पञ्चम वर्ण ही होगा। जैसे—

अप् + मयम् = अम्मयम्

अच् + मात्रम् = अञ्मात्रम्

3. विसर्ग संधि (Combination of Visargas with Vowels or Consonants)

विसर्ग संधि में विसर्ग अपने आगे आनेवाले स्वर वर्ण या व्यंजन वर्ण से मिलकर विकार उत्पन्न करता है।

यानी, विसर्ग (:) + स्वर/व्यंजन वर्ण > विकार।

जैसे—निः + आश्रयः = निराश्रयः

↓ ↓

विसर्ग स्वर

वायुः + चलति = वायुश्चलति

↓ ↓

विसर्ग व्यंजन

(i) खरवसानयोर्विसर्जनीयः (खर + अवसानयोः + विसर्जनीयः)—अर्थात् यदि 'र्' के बाद ख,फ,छ,ठ,थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स (यानी खर् प्रत्याहार का कोई वर्ण) हो अथवा वर्णों का अभाव हो तो 'र्' का विसर्ग हो जाता है। इसे विसर्ग-भाव-संधि भी कहते हैं। जैसे— पुनर् + खादति = पुनः खादति

अन्तर् + करोति = अन्तः करोति

(ii) ससजुषोः रुः—किसी पदान्त में रहनेवाला 'स्' भी 'रु' बनकर अन्ततः 'र्' रह जाता है। जैसे— नीचैस् + करोति = नीचैर् + करोति = नीचैः करोति

परन्तु; किसी अव्यय पद के परे स्वर वर्ण हो तो विसर्ग का 'स्' और 'र्' ही रह जाता है। जैसे—

पुनः + आगतः > पुनस् + आगतः > पुनर् + आगतः = पुनरागतः

(iii) विसर्जनीयः सः— यदि विसर्ग के परे 'खर' प्रत्याहार का कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। जैसे— भाः + करः = भास्करः

विष्णुः + त्राता= विष्णुस्त्राता

(iv) स्तोः श्चुना श्चुः— यदि विसर्ग के परे 'श्' या चवर्ग हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है। जैसे— पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः

रामः + शेते = रामश्शेते

कः + चित् = कश्चित्

निः + चयः = निश्चयः

(v) ष्टुना ष्टुः—इसी तरह विसर्ग का 'स्' होने पर उस 'स्' का 'ष्' हो जाएगा यदि परवर्ण के रूप में 'ष्' या टवर्ग हो। जैसे—

रामः + षष्ठः = रामस् + षष्ठ : = रामष्षष्ठः

धनुः + टंकारः = धनुस् + टंकारः = धनुष्टंकारः

(vi) यदि विसर्ग के बाद श् ष् या स् हो तो विसर्ग का 'स्' विकल्प से आता है। जैसे— सर्पः + सर्पति = सर्पस्सर्पति/सर्पः सर्पति

(vii) यदि अकार के आगे विसर्ग हो और विसर्ग के आगे 'अ' हो तो पूर्ववर्ती 'अ' और विसर्ग के स्थान में 'ओ' हो जाता है। 'ओ' पूर्व वर्ण में मिल जाता है और

परवर्ती 'अ' का लोप हो जाता है। उसके स्थान पर ऽ आ जाता है। जैसे—

नरः + अयम् = नरोऽयम्

वेदः + अधीतः = वेदोऽधीतः

(viii) अकार के परे विसर्ग हो और उसके बाद वर्गों का तीसरा, चौथा या पांचवां वर्ण या अन्तःस्थ वर्ण हो तो पूर्ववर्ती अकार और विसर्ग के स्थान में 'ओ' हो जाता है। जैसे—

सद्यः + जातः = सद्योजातः

वामः + हस्तः = वामोहस्तः

कृतः + लोभः = कृतोलोभः

उन्नतः + नगः = उन्नतोनगः

(ix) यदि 'अकार' के परे विसर्ग हो और उसके परे 'अ' को छोड़ कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—

कुतः + आगतः = कुत आगतः

नरः + इव = नरइव

(x) यदि विसर्ग के स्थान में 'र्' हुआ हो और 'र्' के आगे भी 'र्' हो तो पूर्ववर्ती 'र्' का लोप हो जाता है और पूर्व ह्रस्व स्वर का दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे—

निः + रसः = नीरसः (विसर्ग का 'र्' हुआ

निः + रोगः = नीरोगः एवं 'र्' का लोप हुआ)

विधुः + राजते = विधूराजते

(xi) यदि 'भोः' शब्द के विसर्ग के परे कोई स्वर वर्ण या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य, र, ल, व, ह, हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—

भोः + दामोदर = भो दामोदर

भोः + ईशान = भो ईशान

(xii) निः, दुः, वहिः, प्रादुः, आविः, चतुः आदि के विसर्ग के स्थान में 'ष्' हो जाता है। जैसे—

निः + कुलम् = निष्कुलम्

दुः + करम् = दुष्करम्

वहिः + कृतः = वहिष्कृतः

आविः + कृतः = आविष्कृतः

(xiii) नमः, पुरः, तिरः के आगे 'कृ' धातु के होने पर विसर्ग के स्थान में 'स्' हो जाता है। जैसे—

नमः + कारः = नमस्कारः

पुरः + कारः = पुरस्कारः

तिरः + कार = तिरस्कारः

(xiv) इन उदाहरणों में विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है जैसे—

तमः + काण्डः = तमस्काण्डः

मेघः + पिण्डः = मेघस्पिण्डः

भाः + करः = भास्करः

अहः + करः = अहस्करः

वाचः + पतिः = वाचस्पतिः

अयः + कीलः = अयस्कीलः

www.classnotes.in

णत्व विधान

('न' का 'ण' में परिवर्तन)

(i) ऋ/र्/ष् के बाद 'न' रहने पर 'न्' का 'ण' हो जाता है। जैसे—

नृ + नाम् = नृणाम्
दोष् + ना = दोष्णा
चतुर् + नाम् = चतुर्णाम्

(ii) यदि स्वर वर्ण/कवर्ग/पवर्ग/य, र, व, ह और अनुस्वार का व्यवधान भी हो तो 'न' का 'ण' होगा। जैसे— कर + नम् = करणम्

परे + न = परेण
करि + ना = करिणा

(iii) यदि 'न' में कोई स्वर नहीं हो तो 'न' का 'ण' नहीं होगा। जैसे—

रामान्, वृषान्, ग्रहान् आदि।

(iv) प्र, परा, परि, निर् और अन्तर् के परे नद्, नश्, नम्, नह्, नी, नुद्, अन् और हन् हों तो 'ण' हो जाता है। जैसे—

प्रणदति, प्रणश्यति, पराहणम्, अन्तर्णाशः आदि

अपवाद— *'नश्' का 'श्' अगर 'ष्' हो जाय तो 'न' का 'ण' नहीं होगा। जैसे— प्रनष्टः आदि।*

(v) 'प्र' 'पूर्व', 'अपर' के आगे यदि 'अहन् हो तो 'न' का 'ण' हो जाता है। जैसे— पूर्वाह्णः, अपराह्णः आदि।

(vi) 'उम्र' का बोध होने से 'त्रि' और 'चतुः' शब्द के आगे 'हायन' शब्द के 'न' का 'ण' हो जाता है। जैसे— त्रिहायणो वत्सः, चतुर्हायणी गौः आदि।

(vii) शर, कार्ष, इक्षु, प्लक्ष, आम्र, खदिर तथा प्र, निर्, अन्तर् और अग्रे परे 'वन' के 'न' का 'ण' हो जाता है। जैसे— इक्षुवणम्, शरवणम्, प्रवणम् आदि।

(viii) 'शूर्प' के आगे 'नख' और प्र, द्रु, खर और ब्याघ्री के आगे 'नस' के 'न' का 'ण' हो जाता है। जैसे— शूर्पणखा, खरणसः, ब्याघ्रीणसः आदि।

(ix) गिरि, नदी, प्रभृति के 'न' का 'ण' विकल्प से होता है। जैसे—

गिरिणदी/गिरिनदी, स्वर्णदी/स्वर्नदी आदि।

षत्व विधान

('स' का 'ष' में परिवर्तन)

(i) अवर्ण (अ/आ) को छोड़कर किसी दूसरे स्वर या 'क्' और 'र्' के परे प्रत्यय या विभक्ति का 'स', 'ष' में परिवर्तित हो जाता है। जैसे— मुनि + सु = मुनिषु

वधू + सु = वधूषु
दिक् + सु = दिक्षु
सर्वे + साम् = सर्वेषाम्
गीर् + सु = गीर्षु

(ii) अनुस्वार और विसर्ग का व्यवधान रहने पर भी ऐसा ही होगा। जैसे—

हवीं + सि = हवींषि

www.classroomnotes.in

अपवाद—परन्तु, 'सात्' प्रत्यय के 'स' का 'ष' नहीं होगा। जैसे— भष्मसात, आत्मसात् आदि।

(iii) परि, नि, वि उपसर्ग के परे सेव्, सिव् और सह् धातु का 'स' 'ष' में बदल जाएगा। जैसे— परिषेवते, निषेवते आदि।

(iv) सु, वि, निर्, दुर् उपसर्ग के परे 'सम' के 'स' का 'ष' हो जाएगा। जैसे—
विषम, सुषम आदि।

(v) संज्ञा-बोध होने पर अ, आ से भिन्न स्वर के परे 'सेना' शब्द के 'स' का 'ष' हो जाएगा। जैसे— सुषेण, मधुषेण, हरिषेण आदि।

अपवाद—परन्तु, संज्ञा-बोध न होने पर ऐसा नहीं होगा। जैसे— कुरुसेना, कपिसेना आदि।

(vi) 'भूमि' और 'दिवि' के आगे 'स्थ' तथा 'युधि' के आगे स्थिर रहने पर 'स्' का 'ष्' हो जाएगा। जैसे— भूमिष्ठा, युधिष्ठिर आदि।

(vii) 'मातृ' और 'पितृ' शब्द के परवर्ती 'स्वसृ' शब्द के 'स' का (समास होने की स्थिति में) 'ष' हो जाता है। जैसे—
मातृष्वसा, पितृस्वसा आदि।
परन्तु; समास न होने पर होगा—
मातुः स्वसा, पितुः स्वसा।

www.classroomnotes.in

संधि-सूची

A. स्वर संधि

1. दैत्य + अरि : = दैत्यारिः
2. रत्न + आकरः = रत्नाकरः
3. महा + अनुभावः = महानुभावः
4. महा + आत्मा = महात्मा
5. महा + आलयः = महालयः
6. महा + आशयः = महाशयः
7. पुस्तक + आलयः = पुस्तकालयः
8. देव + आलयः = देवालयः
9. लोक + अपवादः = लोकापवादः
10. विद्या + आलयः = विद्यालयः
11. शिव + आलयः = शिवालयः
12. सचिव + आलयः = सचिवालयः
13. शिक्षा + आलयः = शिक्षालयः
14. चिकित्सा + आलयः = चिकित्सालयः
15. धर्म + अर्थः = धर्मार्थः
16. सत्य + अर्थ = सत्यार्थः
17. शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी
18. विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
19. गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः
20. रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
21. गिरि + ईशः = गिरीशः
22. सती + ईशः = सतीशः
23. रवि + ईशः = रवीशः
24. देवी + इच्छा = देवीच्छा
25. मही + इन्द्रः = महीन्द्रः
26. मही + ईशः = महीशः
27. नदी + ईशः = नदीशः
28. कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः
29. सची + इन्द्रः = सचीन्द्रः
30. विधु + उदयः = विधूदयः
31. सु + उक्तिः = सूक्तिः
32. गुरु+ ऊहः = गुरूहः
33. चमू + उत्साहः = चमूत्साहः
34. वधू + ऊहनम् = वधूहनम्

35. मातृ + ऋणम् = मातृणम्
36. पितृ + ऋणम् = पितृणम्
37. भ्रातृ + ऋद्धिः = भ्रातृद्धि
38. रक्षा + अर्थः = रक्षार्थः
39. सेवा + अर्थी= सेवार्थी
40. नीति + ईशः= नीतीशः
41. जित + इन्द्रियः = जितेन्द्रियः
42. देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः
43. देव + ईशः = देवेशः
44. मृग + इन्द्रः = मृगेन्द्रः
45. नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः
46. नर + ईशः = नरेशः
47. रमा + इन्द्रः = रमेन्द्रः
49. महा + इन्द्रः = महेन्द्रः
50. गंगा + ईशः = गंगेशः
51. गण + ईशः = गणेशः
52. स्व + ईरः = स्वैरः
53. स्व + ईरी = स्वैरी
54. स्व + ईरिणी = स्वैरिणी
55. सूर्य + उदयः = सूर्योदयः
56. पूर्व + उदयः = पूर्वोदयः
57. नव + उदयः = नवोदयः
58. चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः
59. हित + उपदेशः = हितोपदेशः
60. जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः
61. गंगा + ऊर्मिः = गंगोर्मिः
62. एक + ऊनम् = एकोनम्
63. महा + उपदेशः = महोपदेशः
64. महा + उदयः = महोदयः
65. गंगा + उदकम् = गंगोदकम्
66. अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी
67. प्र + ऊहः = प्रौहः
68. प्र + ऊढिः = प्रौढिः
69. प्र + ऊढ़िः = प्रौढः
70. प्र + एषः = प्रैषः
71. प्र + एष्यः = प्रैष्यः
72. देव + ऋषिः = देवर्षिः
73. सप्त + ऋषिः = सप्तर्षिः
74. महा + ऋषिः = महर्षिः
75. मास + ऋतुः = मासर्तुः
76. राज + ऋषि= राजर्षिः
77. तव + लृकारः = तवल्कारः
78. एक + एकः = एकैकः
79. अद्य + एव = अद्यैव
80. तथा + एव= तथैव
81. सदा + एव = सदैव
82. तदा + एव = तदैव
83. यथा + एवम् = यथैवम्
84. मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्
85. देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्
86. सदा + ऐक्य = सदैक्य
87. विद्या + ऐश्वर्यम् = विद्यैश्वर्यम्
88. जल + ओघः = जलौघः
89. गंगा + ओघः = गंगौघः
90. वन + ओकः = वनौकः
91. गृह + औत्सुक्यम् = गृहौत्सुक्यम्
92. तव + औदार्यम् = तवौदार्यम्
93. महा + ओषधिः = महौषधिः
94. महा + ओजः = महौजः
95. महा + औदार्यम् = महौदार्यम्
96. सुख + ऋतः = सुखार्तः
97. दुःख + ऋतः = दुःखार्तः
98. भय + ऋतः = भयार्तः
99. इति + आदि = इत्यादि
100. यदि + अपि = यद्यपि
101. नदी + आवेगः = नद्यावेगः
102. अनु + अयः = अन्वयः
103. सु + आगतम् = स्वागतम्
104. लृ + आकृतिः = लाकृतिः
105. मातृ + आदेशः = मात्रादेशः
106. मातृ + आनंदः = मात्रानंदः
107. ने + अनम् = नयनम्
108. शे + अनम् = शयनम्
109. हरे + ए = हरये
110. मुने + ए = मुनये
111. भो + अनम् = भवनम्
112. पो + अनः = पवनः
113. भो + इति = भवति

114. गुरो + ए = गुरवे
115. नै + अकः = नायकः
116. विनै + अकः = विनायकः
117. गै + अकः = गायकः
118. नै + इका = नायिका
119. गै + इका = गायिका
120. सखै + औ = सखायौ
121. गै + अति = गायति
122. पौ + अकः = पावकः
123. गौ + औ = गावौ
124. द्वौ + एव = द्वावेव
125. भौ + उकः = भावुकः
126. रौ + अणः = रावणः
127. गौ + यम् = गव्यम्
128. गौ + यूतिः = गव्यूतिः
129. नौ + यम् = नाव्यम्
130. हरे + अव = हरेऽव
131. सखे + अत्र = सखेऽत्र
132. मुने + अर्च = मुनेऽर्च
133. भानो + अव = भानोऽव
134. गुरो + अत्र = गुरोऽत्र
135. प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण
136. प्र + एजते = प्रेजते
137. प्र + एषयति = प्रेषयति
138. प्र + ओषति = प्रोषति
139. उप + ओषति = उपोषति
140. मार्त + अण्डः = मार्तण्डः
141. हरी + एतौ = हरी एतौ
142. मुनी + इमौ = मुनी इमौ
143. विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ
144. भानू + अत्र = भानू अत्र
145. गंगे + अमू = गंगे अमू
146. लते + एते = लते एते
147. हल + ईषा = हलीषा
148. सार + अङ्ग = सारङ्ग
149. सीमन् + अन्तः = सीमन्तः
150. कुल + अटा = कुलटा
151. पर + अक्षः = परोक्षः
152. अद्य + अपि = अद्यापि

व्यंजन संधि

153. अप् + जम् = अब्जम्
154. दिक् + नागः = दिङ्नागः
155. अच् + हीनम् = अज्झीनम्
156. मधुलिट् + मत्तः = मधुलिण्मत्तः
157. अप् + नदी = अब्नदी
158. शत्रुम् + जयः = शत्रुञ्जयः
159. हसन् + चलितः = हसंश्चलितः
160. धावन् + आयाति = धावन्नायाति
161. कवीन् + आह्वय= कवीन्नाह्वय
162. महान् + आगच्छति = महान्नागच्छति
163. वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
164. लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया
165. परि + छेदः = परिच्छेदः
166. अनु + छेदः = अनुच्छेदः
167. आ + छादनम् = आच्छादनम्
168. उत् + स्थानम् = उत्थानम्
169. सम् + सारः = संसारः
170. सम् + तोषः= संतोषः
171. सम् + धि = संधि
172. सम् + कृतिः = संस्कृतिः
173. सम् + कारः = संस्कारः
174. सम् + कृतम् = संस्कृतम्
175. महान् + छागः = महांश्छागः
176. नृत्यन् + चकोरः = नृत्यंश्चकोरः
177. चलन् + टिट्टिभः = चलंष्टिट्टिभः
178. क्षिपन् + शुत्कारः = क्षिपंस्थुकारः
179. पुम् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः
180. पुम् + चली = पुंश्चली
181. सत् + छागः: = सच्छागः
182. पृष् + तः = पृष्टः
183. पृष् + थः = पृष्ठः
184. आकृष् + त = आकृष्ट
185. रामस् + शेते = रामश्शेते
186. रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति
187. सत् + चित् + आनंदः = सच्चिदानंदः
188. सत् + चरित्रः = सच्चरित्रः
189. उत् + चारणम् = उच्चारणम्

www.classnotes.in

190. उत् + लेखः = उल्लेखः
191. उत् + हारः = उद्धारः
192. उत् + हरणम् = उद्धरणम्
193. तद् + जयः = तज्जयः
194. सत् + जनः = सज्जनः
195. एतद् + जयति = एतज्जयति
196. राजन् + जय = राजञ्जय
197. रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः
198. रामस् + टीकते = रामष्टीकते
199. तत् + टीका = तट्टीका
200. तत् + लीनः = तल्लीनः
201. एतत् + टीकते = एतट्टीकते
202. उद् + डयनम् = उड्डयनम्
203. उत् + योगः = उद्योगः
204. उद् + डीयताम् = उड्डीयताम्
205. वाक् + ईशः = वागीशः
206. दिक् + गजः = दिग्गजः
207. अच् + अन्तः = अजन्तः
208. अच् + लुप्तः = अज्लुप्तः
209. सम् + राट् = सम्राट्
210. सम्राट् + अयम् = सम्राडयम्
211. षट् + भ्रातरः = षड्भ्रातरः
212. जगत् + ईशः = जगदीशः
213. जगत् + नाथः = जगन्नाथः
214. महत् + दानम् = महद्दानम्
215. अप् + आदानाम् = अबादानाम्
216. तत् + लयः = तल्लयः
217. यद् + लाभः = यल्लाभः
218. विद्वान् + लिखति = विद्वाँल्लिखति
219. प्राक् + मुखः = प्राग्मुखः
220. वाक् + मय = वाङ्मय
221. अच् + नास्ति = अज्नास्ति
222. षट् + मासाः = षड्मासाः
223. अप् + माधुर्यम् = अब्माधुर्यम्
224. वाक् + मात्रम् = वाङ्मात्रम्
225. चित् + मयम् = चिन्मयम्
226. तत् + मात्रम् = तन्मात्रम्
227. अप् + मयम् = अम्मयम्
228. षट् + मासः = षण्मासः
229. तत् + शिवः = तच्छिवः
230. महत् + शिला = महच्छिला
231. तत् + शरणम् = तच्छरणम्
232. एतत् + श्रुत्वा = एतच्छ्रुत्वा
233. हरिम् + वन्दे = हरिंवन्दे
234. धनम् + यच्छ = धनंयच्छ
235. दुःखम् + सहते = दुःखंसहते
236. देशम् + रक्षति = देशंरक्षति
237. यशान् + सि = यशांसि
238. विद्वान् + सौ = विद्वांसौ
239. आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते
240. रम् + स्यते = रंस्यते
241. क्षेत्रम् + लुनाति = क्षेत्रंलुनाति
242. वस्त्रम् + हरति = वस्त्रंहरति
243. शन् + कते = शङ्कते
244. मुन् + चति = मुञ्चति
245. लुन् + ठति = लुण्ठति
246. नन् + दति = नन्दति
247. लिन् + पति= लिम्पति
248. काम् + तिः = कान्तिः
249. शाम् + तिः = शान्तिः
250. किम् + चित् = किञ्चित्
251. किम् + करोषि = किङ्करोषि
252. कथम् + चलसि = कथञ्चलसि
253. शन् + कते = शङ्कते
254. त्वम् + तिष्ठ = त्वन्तिष्ठ
255. वाक् + हरिः = वाग्घरिः
256. षट् + होतारः = षड्ढोतारः
257. उत् + हृतम् = उद्धृतम्
258. तत् + हितम् = तद्धितम्
259. शिव + छाया = शिवच्छाया
260. वि + छेदः = विच्छेदः
261. स्व + छन्दः = स्वच्छन्दः
262. राज + छत्रम् = राजच्छत्रम्
263. देवी + छाया = देवीच्छाया
264. महान् + तस्करः = महांस्तस्करः
265. भवान् + चलति = भवांश्चलति
266. महान् + चमत्कारः महांश्चमत्कारः

267. सम् + कर्ता: = संस्कर्ता:
268. उत् + ज्वल: = उज्ज्वल:
269. राजन् + जागृहि = राजञ्जागृहि
270. तद् + शरीरं = तच्छरीरं
271. तद् + हेयम् + तद्धेयम्
272. विपद् + हेतु: = विपद्धेतु:
273. यज् + न: = यज्ञ:
274. राज् + नी = राज्ञी
275. उत् + टलति = उट्टलति
276. सत् + ठकार: = सट्ठकार:
277. भवत् + डमरू: = भवड्डमरू:
278. एतद् + डामर: = एतड्डामर:
279. महत् + ठालम् = महड्ठालम्
280. महान् + डामर: = महाण्डामर:
281. निविष् + त: = निविष्ट:
282. उत् + लेख: = उल्लेख:
283. महान् + आग्रह: = महानाग्रह:
284. पश्यन् + चकित: = पश्यंश्चकित:
285. उद्यन् + टङ्कार: = उद्यंष्ट्ङ्कार:
286. सत्वरम् + याति = सत्वरंयाति
287. भारम् + वहति = भारंवहति
288. कष्टम् + सहते = कष्टंसहते
289. त्वक् + इन्द्रियम् = त्वगिन्द्रियम्
290. सम्यक् + उक्तम् = सम्यगुक्तम्
291. धिक्+ऋणकारिणम् = धिगृणकारिणम्
292. सम्यक् + ओज: = सम्यगोज:
293. वाक् + जालम् = वाग्जालम्
294. वाक् + दानम् = वाग्दानम्
295. दिक् + भाग: = दिग्भाग:
296. धिक् + याचकम् = धिग्याचकम्
297. वाक् + रोध: = वाग्रोध:
298. जगत् + अन्त: = जगदन्त:
299. जगत् + आदि: = जगदादि:
300. तत् + ऋणम् = तदृणम्
301. महत् + ओज: = महदोज:
302. जयत् + रथ: = जयद्रथ:
303. अच् + अन्त: = अजन्त:

विसर्ग संधि

304. अन्तर् + करणम् = अंत:करणम्
305. अन्तर् + करोति = अन्त:करोति
306. प्रात: + काल: = प्रात:काल:
307. प्रातर् + पठति = प्रात: पठति
308. पुनर् + खादति = पुन: खादति
309. उच्चैस् + करोति = उच्चै:करोति
310. नीचैस् + खनति = नीचै:खनति
311. भूयस् + खादति = भूय:खादति
312. पुन: + आगत: = पुनरागत:
313. भा: + कर: = भास्कर:
314. यश: + तनोति = यशस्तनोति
315. गज: + तिष्ठति = गजस्तिष्ठति
316. विष्णु : + त्राता = विष्णुस्त्राता
317. पूर्ण: + चन्द्र: = पूर्णश्चन्द्र:
318. यश: + चिनोति = यशश्चिनोति
319. गज: + चलति = गजश्चलति
320. विष्णो: + छाया = विष्णोश्छाया
321. राम: + शेते = रामश्शेते
322. क: + चित् = कश्चित्
323. नि: + चय: = निश्चय:
324. राम: = षष्ठ: = रामष्षष्ठ:
325. धनु: + टंकार: = धनुष्टंकार:
326. नि: + सृत: = नि:स्तृत:/निस्सृत:
327. सर्प: + सर्पति = सर्प:सर्पति
328. पशु:+षष्ठ: = पशुष्षष्ठ:/ पशु:षष्ठ:
329. क: + करोति = क: करोति
330. सर: + वर: = सरोवर:
331. मन: + रम: = मनोरम:
332. मन: + विकार: = मनोविकार:
333. यश: + दा = यशोदा
334. मन: + रथ: = मनोरथ:
335. पय: + द: = पयोद:
336. पय: + धर: = पयोधर:
337. शिव: + वन्द्य: = शिवोवंद्य:
338. कुत: + अत्र = कुतोऽत्र
339. देव: + अपि = देवोऽपि
340. शिव: + अर्च्य : = शिवोऽर्च्य:
341. छात्र: + अस्ति = छात्रोऽस्ति

342. रामः + अयम् = रामोऽयम्
343. सः + अवदत् = सोऽवदत्
344. कः + अयम् = कोऽयम्
345. भोः + देवाः = भो देवाः
346. भगोः + नमस्ते = भगो नमस्ते
347. देवाः + वंद्याः = देवा वंद्याः
348. नराः + यान्ति = नरा यान्ति
349. शम्भुः + राजते = शम्भू राजते
350. निः + रसः = नीरसः
351. सः + चलति = स चलति
352. ज्योतिः + चक्रम् = ज्योतिश्चक्रम्
353. भीतः + टलति = भीतष्टलति
354. नद्याः + तीरम् = नद्यास्तीरम्
355. सुप्तः + शिशुः = सुप्तश्शिशुः
356. दुः + शासनः = दुश्शासनः/ दुःशासनः
357. नूतनः + घटः = नूतनोघटः
358. निर्वातः + दीपः = निर्वातोदीपः
359. अतीतः + मासः = अतीतोमासः
360. कृतः + लोभः = कृतोलोभः
361. वाकः + हस्तः = वाकोहस्तः
362. कः + एषः = कएषः
363. ताराः + उदिताः = तारा उदिताः
364. गतिः + इयम् = गतिरियम्
365. देवाः + इह = देवा इह
366. देवः + इति = देव इति
367. कः + आयाति = क आयाति
368. पुनः + रमते = पुना रमते
369. हरिः + रम्यः = हरी रम्यः
370. निः + रोगः = नीरोगः
371. सः + पठति = स पठति
372. एषः + लिखति = एष लिखति
373. तरोः + छाया = तरोश्छाया
374. उन्नतः + तरुः = उन्नतस्तरुः
375. क्षिप्रः + थुत्कारः = क्षिप्रस्थुत्कारः
376. उन्नतः + शीलः = उन्नतश्शीलः
377. वेदः + अधीतः = वेदोऽधीतः
378. शोभनः + गंधः = शोभनोगन्धः
379. सद्यः + जातः = सद्योजातः
380. अकुतः + भयः = अकुतोभयः
381. शान्तः + रोषः = शान्तोरोषः
382. शीतः + वायुः = शीतोवायुः
383. देवः + ऋषिः = देवऋषिः
384. रक्तः + ओष्ठः = रक्तओष्ठः
385. कविः + अयम् = कविरयम्
386. श्रीः + असौ = श्रीरसौ
387. निः + करम् = निष्करम्
388. निः + फलम् = निष्फलम्
389. वहिः + कृतः = वहिष्कृतः
390. चतुः + पुत्री = चतुष्पुत्री
391. नमः + ते = नमस्ते
392. चतुः + भुजः = चतुर्भुजः
393. चतुः + तयम् = चतुष्टयम्
394. अयः + कान्तः = अयस्कान्तः
395. तमः + काण्डः = तमस्काण्डः
396. निः + कुलम् = निष्कुलम्
397. दुः + करम् = दुष्करम्
398. आविः + कृतः = आविष्कृतः
399. नमः + कारः = नमस्कारः
400. पुरः + कारः = पुरस्कारः
401. तिरः + कारः = तिरस्कारः
402. श्रेयः + करः = श्रेयस्करः
403. मनः + कामः = मनस्कामः
404. मेघः + पिण्डः = मेघस्पिण्डः

प्रश्न-अभ्यास

1. संधि करें—(उदाहरण—यदि + अपि = यद्यपि, मनः + रथः = मनोरथः)

यदि + अपि	= ----------------	वाक् + ईशः	= ----------------
अनु + अयः	= ----------------	प्राक् + एव	= ----------------
पितृ + आदेशः	= ----------------	जगत् + नाथः	= ----------------

अति + आवश्यकः	=	----------------	वाक् + हरिः	=	----------------
अति + उत्तमः	=	----------------	निः + रोगः	=	----------------
मधु + आलयः	=	----------------	देव + ऋषिः	=	----------------
दधि + अत्र	=	----------------	दुः + शासनः	=	----------------
इति + उक्त्वा	=	----------------	सर्व + उत्तमः	=	----------------
तत् + टीका	=	----------------	कुल + अटा	=	----------------
उत् + श्वासः	=	----------------	विश्व + मित्रः	=	----------------
तत् + शिरः	=	----------------	तत् + हितम्	=	----------------
तत् + श्रुत्वा	=	----------------	मनः + रथः	=	----------------

2. संधि विच्छेद करें (उदाहरण—देवेन्द्रः = देव + इन्द्रः, निश्चयः = निः + चयः)

धनुष्टंकारः	=	----------	+	----------	अब्जम्	=	----------	+	----------
धावञ्छशः	=	----------	+	----------	शत्रुञ्जयः	=	----------	+	----------
गौरस्ति	=	----------	+	----------	परिच्छेदः	=	----------	+	----------
खल्वयम्	=	----------	+	----------	उत्थानम्	=	----------	+	----------
चतुष्कोणम्	=	----------	+	----------	वृक्षच्छाया	=	----------	+	----------
अधोगति	=	----------	+	----------	कवीन्नाह्वय	=	----------	+	----------
अहोरात्रम्	=	----------	+	----------	अमीअश्वाः	=	----------	+	----------
भास्करः	=	----------	+	----------	गवाक्षः	=	----------	+	----------
स उवाच	=	----------	+	----------	गव्यम्	=	----------	+	----------
पित्राज्ञा	=	----------	+	----------	हलीषा	=	----------	+	----------
प्रेजते	=	----------	+	----------	मार्तण्डः	=	----------	+	----------
चक्षूरोगः	=	----------	+	----------	सीमन्तः	=	----------	+	----------
नीरसः	=	----------	+	----------	पतञ्जलिः	=	----------	+	----------
महांश्छागः	=	----------	+	----------	प्रौढः	=	----------	+	----------
संस्कृतम्	=	----------	+	----------	परमर्त्तः	=	----------	+	----------
देवेन्द्रः	=	----------	+	----------	निश्चयः	=	----------	+	----------

3. निम्नलिखित शब्दों में कौन-कौन सी संधियाँ हुई हैं, तालिका पूरी करें

शब्द	स्वर संधि	व्यञ्जन संधि	विसर्ग संधि
जगन्नाथः	----------	----------	----------
नरेन्द्रः	----------	----------	----------
सच्चिदानन्दः	----------	----------	----------
अनुच्छेदः	----------	----------	----------
मनोविकारः	----------	----------	----------
सरोवरः	----------	----------	----------
व्याकुलः	----------	----------	----------
निरुपायः	----------	----------	----------
शकन्धुः	----------	----------	----------

www.classroomnotes.in

4. शुद्ध शब्दों के वर्गों में √ का चिह्न एवं अशुद्ध शब्दों के वर्गों में × का चिह्न लगाएँ

किम्करोति	☐	शुष्केण	☐	शूर्पनखा	☐	रामेसु	☐
किंकरोति	☐	अपराह्नः	☐	शूर्पणखा	☐	सिषेवे	☐
दिक्पालः	☐	अपराह्णः	☐	हरिनन्दनः	☐	सिसेवे	☐
दिग्पालः	☐	रामायणम्	☐	हरिणन्दनः	☐	गमिस्यति	☐
तत्लयः	☐	रामायनम्	☐	प्राणः	☐	गमिष्यति	☐
तल्लयः	☐	प्रयाणम्	☐	प्रानः	☐	वृशभः	☐
निःसरति	☐	प्रयानम्	☐	भानुषु	☐	वृषभः	☐
निस्सरति	☐	विषमः	☐	भानुसु	☐	पुष्पम्	☐
शुश्केन	☐	विसमः	☐	रामेषु	☐	पुस्पम्	☐

5. निम्नलिखित शब्दों में से किन में णत्व हुआ है ? '√' चिह्न लगाएँ

कणः	☐	गुणः	☐	वाणी	☐	ग्रन्थणम्	☐
मणिः	☐	लवणम्	☐	बाणः	☐	आचार्याणी	☐
पुण्यम्	☐	चणकः	☐	तूणीरः	☐	शुत्रुघ्णः	☐

6. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करें—

मुनिस ---------------- वितस्ठे ------------------- गोसु --------------------
प्रतिसेध ---------------- सुसुप्तः ------------------- वृशभः --------------------
मेशः ---------------- द्वेशः ------------------- वर्सा --------------------
कृप्या ---------------- शृंगारः ------------------- विशयः --------------------
पुरष्कारः ---------------- वहिस्कार -------------------

7. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, जो संधि के नियमों के अनुसार गलत हैं। उनके शुद्ध रूप लिखें—

मही + इशः = महेशः --------------- + --------------- = ---------------
दिन + एशः = दिनेशः --------------- + --------------- = ---------------
गजः + इन्द्रः = गजेन्द्रः --------------- + --------------- = ---------------
एक + एकम् = एकएकम् --------------- + --------------- = ---------------
तथा + अपि = तथोऽपि --------------- + --------------- = ---------------
गै + अकः = गयकः --------------- + --------------- = ---------------
कुलः + अटा = कुलोटा --------------- + --------------- = ---------------
हित + उपदेशः = हितौपदेशः --------------- + --------------- = ---------------
प्र + ऊढः = प्रोढ्ः --------------- + --------------- = ---------------
उत् + लेखः = उल्लेखः --------------- + --------------- = ---------------
देवा + ऋषिः = देवृषिः --------------- + --------------- = ---------------
दिग् + अम्बरः = दिगम्बरः --------------- + --------------- = ---------------
सच् + जनः = सज्जनः --------------- + --------------- = ---------------
तत + नः = तदन्नः --------------- + --------------- = ---------------
द्रष + ता = द्रश्टा --------------- + --------------- = ---------------

www.classroomnotes.in

8. निम्नलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या करें—

(i) अकः सवर्णे दीर्घः

(ii) झलां जशोऽन्ते

9. निम्नलिखित पदों में 'न' के स्थान में 'ण' क्यों हुआ है ? कारण बताएँ।

दीर्घेण, दर्पेण, दोष्णा, गुरुणा, चतुर्णाम्, मृगेण, कराणाम्

C.B.S.E, बिहार, झारखंड एवं U.P बोर्ड में पूछे गए प्रश्न

1. अधोलिखितेषु रेखाङ्कितानाम् संधियुक्तपदानाम् संधिच्छेदं कुरुत—

(a) परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् ---------------- + ----------------
(b) सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते। ---------------- + ----------------
(c) यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः। ---------------- + ----------------
(d) तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ---------------- + ----------------
(e) यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ---------------- + ----------------
(f) नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि। ---------------- + ----------------
(g) अहं पुस्तकालयं गच्छामि। ---------------- + ----------------
(h) तरुणः व्यसनेषु पुनारमते। ---------------- + ----------------
(i) तत्र मम उल्लेखः न अभवत् ---------------- + ----------------
(j) रामोऽयं मर्यादापुरुषोत्तमः। ---------------- + ----------------
(k) पत्युर्गृहं कदा गमिष्यसि ? ---------------- + ----------------
(l) कश्चित् नरः आयाति। ---------------- + ----------------
(m) प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो देवोऽपि तं लङ्घयितुं न शक्तः। ---------------- + ----------------

2. अधोलिखितेषु संधियुक्तपदानि रेखाङ्कितानि कुरुत—

(a) अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीह यमालयम्।
(b) हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।
(c) सदाभिमानैकधना हि मानिनः।
(d) नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने।
(e) परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥
(f) आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव।
(g) पश्य वागीशः सत्यजिच्च प्रश्नानां समाधाने तल्लीनाः सन्ति।
(h) शिवस्य पुत्रः षडाननः अपि अस्ति।
(i) तच्चित्रं रम्यम् अस्ति।

www.classroomnotes.in

3. अधोलिखितकथायाम् रेखाङ्कित पदेषु संधिं कृत्वा पुनः लिखत—

अथ एकदा गुरुकुले सायङ्काले कृष्णः यज्ञ अर्थम् काष्ठानि आनेतुम् वनम् गतवान्। सहसा एव वृष्टिः आगता। मेघाः गर्जनम् कृतवन्तः। विद्युत अपि अदीव्यत्। सर्वत्र अन्धकारः जातः। सर्वां रात्रिम् स तत्र एव वृक्षस्य अधः अतिष्ठत्। प्रातः काले तस्य गुरुः महा ऋषिः संदीपनिः तम् अन्विष्यन् तत्र आगतः। गुरुम् दृष्ट्वा कृष्णः उत् लसितः जातः।

4. अधोलिखितेषु पदेषु वर्तनी संशोधनं कुरुत—

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
महर्षिना	----------	पराजिताणाम्	----------
प्रपर्नः	----------	वृक्षेन	----------
पराण्	----------	निरोगः	----------
पुनः रमते	----------	पित्रेच्छा	----------
देविन्द्रः	----------	परूपकारः	----------
कवेश्वरः	----------	मधुत्र	----------
प्रत्योपकारः	----------	भ्रातृज्ञा	----------

5. अधोलिखितपदेषु बाधकवर्णान् कोष्टके लिखत—

	पदम्	बाधकवर्णः	
उदाहरण—	प्रधानम्	ध्	(तवर्गीयः)
	ईदृशेन्	----------	( )
	रक्तेन	----------	( )
	प्रलापेन	----------	( )
	दर्शनानि	----------	( )
	परिवर्तनम्	----------	( )
	गृहस्थेन्	----------	( )
	प्रतिमानम्	----------	( )

संकेत—किन वर्णों की उपस्थिति के कारण 'न' का 'ण' नहीं हो पाया है। उन वर्णों एवं संबंधित वर्णों के नाम लिखें।

6. निम्नलिखित शब्दों का संधिविच्छेद करें एवं उनके सामने संधि के नाम लिखें।

	शब्द	संधिविच्छेद	संधि के नाम
उदाहरण—	देवालयः	देव + आलयः	स्वर संधि
	कुतोऽत्र	------- + -------	----------
	बकास्तत्र	------- + -------	----------
	नीरोगः	------- + -------	----------
	जगन्नाथः	------- + -------	----------
	सप्तर्षिः	------- + -------	----------
	सूर्योदयः	------- + -------	----------
	वाङ्मयम्	------- + -------	----------

www.classroomnotes.in

अन्वयः	-------- + ---------	----------------------
सोऽवदत्	-------- + ---------	----------------------
नयनम्	-------- + ---------	----------------------
इत्यादि	-------- + ---------	----------------------
महेन्द्रः	-------- + ---------	----------------------
महात्मा	-------- + ---------	----------------------
भास्करः	-------- + ---------	----------------------
पूर्णश्चन्द्रः	-------- + ---------	----------------------
लोकापवादः	-------- + ---------	----------------------
कश्चित्	-------- + ---------	----------------------
स्वागतम्	-------- + ---------	----------------------
पृष्ठम्	-------- + ---------	----------------------
उद्धारः	-------- + ---------	----------------------
विनायकः	-------- + ---------	----------------------

★★★

www.classroomnotes.in